आवश्यक में अशुभयोग त्याज्य घटी—

विष्कुम्भवज्रयोस्तिस्रः षट् च गण्डातिगण्डयोः।
व्याघाते नव शूले तु पञ्च नाड्यस्तु गर्हिताः॥
सवैधृतिर्व्यतीपातो महापातावुभौ सदा।
परिघस्य तु पूर्वार्द्धं सर्वकार्येषु गर्हितम्॥

विष्कुम्भ और वज्र की प्रथम ३ घटी, गण्ड और अतिग की ६, व्याघात की ९, शूल की ५, वैधृति और व्यतीपात सम्पूर्ण तथा परिघ योग का पूर्वार्द्ध सब शुभ कार्यों में वर्ज्य

योगोत्पत्ति—

वाक्पतेरर्कनक्षत्रं श्रवणाच्चान्द्रमेव च।
गणयेत्तद्युतिं कुर्याद्योगः स्यादृक्षशेषतः॥

पुष्य नक्षत्र से वर्तमान सूर्याधिष्ठित नक्षत्र पर्यन्त की तथा श्रवण से चन्द्राधिष्ठित नक्षत्र पर्यन्त की संख्याओं का योग करके २८ से भाग देने पर जो शेष बचे, विष्कुम्भादि से उतने योग गिनकर समझना चाहिये।

उदाहरण— संवत् २०२० वैशाख कृष्ण अमावस्या शनिवार में योग जानना है। उस दिन सूर्य अश्विनी और चन्द्र अश्विनी में हैं। अतः पुष्य से अश्विनी तक २१ संख्या और श्रवण से अश्विनी तक ६ संख्या हुई, दोनों का योग २१+६. २८÷२८ शेष १ योग हुआ।

डॉ० सुधिर कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा०उ० सं० महावि० सुक्सेन
पूर्णियाँ।

दिन में – (अहोरात्र के पूर्वार्ध में) १ आर्द्रा, २ आश्लेषा, ३ अनुराधा, ४ मघा, ५ धनिष्ठा, ६ पूर्वाषाढ़ा, ७ उत्तराषाढ़ा, ८ अभिजित्, ९ रोहिणी, १० ज्येष्ठा, ११ विशाखा, १२ मूल, १३ शततारा, १४ उत्तराफाल्गुनी, १५ पूर्वाफाल्गुनी।

तदनन्तर –

रात्रि में – (अहोरात्र के उत्तरार्ध में) १ आर्द्रा, २ पूर्वाभाद्र, ३ उत्तराभाद्र, ४ रेवती, ५ अश्विनी, ६ भरणी, ७ कृत्तिका, ८ रोहिणी, ९ मृगशिरा, १० पुनर्वसु, ११ पुष्य, १२ श्रवण, १३ हस्त, १४ चित्रा, १५ स्वाती।

स्थूल नक्षत्र निषिद्ध भी हो तो आवश्यक में विहित क्षण-नक्षत्रों में कार्य की सिद्धि होती है।

योग विचार –

भूकेन्द्रीय-दृष्टि से सूर्य चन्द्रमा की गति का योग जब एक नक्षत्रभोग (८०० कला) तुल्य होता है, तब एक योग होता है। ये विष्कुम्भादि नाम से २७ प्रसिद्ध हैं। –

विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा।
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च॥
गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा।
वज्रसिद्धी व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः।
सिद्धसाध्यौ शुभः शुक्लो ब्रह्मैन्द्रो वैधृतिस्तथा।
सप्तविंशतियोगाः स्युः स्वनामसदृशं फलम्॥

P.T.O

उपशास्त्री

Page No. 01
Date 05 06 21

तीक्ष्ण नक्षत्र और उनके कृत्य —

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम् ।
तत्राऽभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार ये तीक्ष्ण और दारुण संज्ञक हैं, इनमें अभिचार (मारण, मोहन, भूत-बेताल की सिद्धि), घात, पापकृत्य, मित्रों में भेद डालना तथा पशु का दमन करना इत्यादि क्रूरकर्म सिद्ध होते हैं।

अधः, ऊर्ध्व और तिर्यङ्मुख नक्षत्र —

मूलाहिमिश्रोग्रमधोमुखं भवेदूर्ध्वास्यमार्द्रेज्यहरित्रयं ध्रुवम् ।
तिर्यङ्मुखं मैत्रकरानिलादितिज्येष्ठाश्विभानीदृशकृत्यमेषु सत ॥

मूल, आश्लेषा, विशाखा, कृत्तिका, तीनों-पूर्वा, भरणी और मघा ये अधोमुख नक्षत्र हैं। आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शततारा, तीनों उत्तरा और रोहिणी ये ऊर्ध्वमुख तथा अनुराधा, हस्त, स्वाती, पुनर्वसु, ज्येष्ठा एवं अश्विनी ये तिर्यङ्मुख नक्षत्र हैं। जैसा जो नक्षत्र है उसमें वैसा कार्य शुभ होता है।

जैसे - अधोमुख में पृथ्वी सम्बन्धी (खेती करना, कूप खोदना, तालाब निर्माण करना इत्यादि) ऊर्ध्वमुख में मकान आदि का आरम्भ करना तथा तिर्यङ्मुख में बाँध बँधवाना, गमन करना आदि कार्य शुभ होते हैं।

विशेष - तिथि और वार के समान ही नक्षत्रों के भी स्थूल और सूक्ष्म दो भेद होते हैं। प्रत्येक दिन सूर्योदय से 2, 2 घटी का एक-एक क्षण (सूक्ष्म) नक्षत्र होता है। अतः अहोरात्र में 30 सूक्ष्म नक्षत्र बीतते हैं। यथा —

P.T.O